

मिथिला क्षेत्र में गोदना कला का त्वचा से कैनवास तक का सफर

फैजुल्लाह अहमद

शोधसार

प्रस्तुत शोध पत्र मिथिला क्षेत्र की पारंपरिक गोदना कला के त्वचा से कैनवास पर रूपांतरण का विश्लेषण करता है। गोदना कला, जो मूल रूप से एक टैटू प्रथा थी, अब एक सम्मानित दृश्य कला के रूप में उभरी है। समकालीन समय में, गोदना कला ने आधुनिक सामग्री और तकनीकों को अपनाते हुए कैनवास पर अपनी जगह बनाई है। प्रस्तुत शोध पत्र में यह भी विश्लेषण किया गया है कि कैसे गोदना कला का व्यावसायीकरण स्थानीय अर्थव्यवस्था और कलाकारों की आजीविका को प्रभावित कर रहा है। यह शोध पत्र गोदना कला के संरक्षण और संवर्धन के लिए संभावित पहल और नीतियों की सिफारिश करता है। गोदना कला की त्वचा से कैनवास तक की यात्रा न केवल एक कला रूप का विकास है, बल्कि यह मिथिला की सांस्कृतिक धरोहर को जीवित रखने और इसे आधुनिक संदर्भों में प्रासंगिक बनाने का भी प्रयास है।

बीजशब्द : कला बाजार; गोदना कला; त्वचा कला; मिथिला कला; भारतीय लोक कला ।



चित्र-१



चित्र-२

गोदना कला, त्वचा से कैनवास

परिचय

गोदना कला मिथिला क्षेत्र की एक प्राचीन और महत्वपूर्ण सांस्कृतिक धरोहर है। यह कला रूप, जो मूल रूप से त्वचा पर टैटू के रूप में उकेरी जाती थी, अपने अद्वितीय रूपांकन और गहन सांस्कृतिक अर्थों के लिए प्रसिद्ध है। पारंपरिक गोदना टैटू न केवल सौंदर्य की दृष्टि से महत्वपूर्ण थे, बल्कि वे धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक मान्यताओं का प्रतीक भी थे।¹ मिथिला की महिलाएँ और पुरुष सदियों से इन टैटू को धारण करते आए हैं, जिससे उनके समाज में इनकी गहरी पैठ और महत्वपूर्ण भूमिका का पता चलता है। हाल के दशकों में, गोदना कला ने एक महत्वपूर्ण परिवर्तन का अनुभव किया है। पारंपरिक त्वचा-आधारित टैटू से विकसित होकर यह कला अब कैनवास और अन्य सतहों पर अपनी पहचान बना रही है। इस परिवर्तन के पीछे कई कारक हैं, जिनमें सामाजिक परिवर्तन, आर्थिक अवसर, और आधुनिक कला आंदोलनों का प्रभाव शामिल है।²

गोदना कला का यह रूपांतरण केवल भौतिक स्तर पर नहीं हुआ है, बल्कि इसके तकनीकी और सांस्कृतिक पहलुओं में भी महत्वपूर्ण बदलाव देखने को मिले हैं। पारंपरिक तकनीकों और सामग्रियों के स्थान पर आधुनिक उपकरण और रंगों का उपयोग बढ़ रहा है, जिससे इस कला के अभिव्यक्ति के नए रूप सामने आए हैं। समकालीन गोदना कलाकार पारंपरिक रूपांकनों और प्रतीकों को आधुनिक संदर्भों में अनुकूलित कर रहे हैं, जिससे इस कला को नई ऊंचाइयाँ मिल रही हैं। समय के साथ मिथिला की पारंपरिक कला का विकसित रूप देखने को मिलता है।

भारत में गोदना कला

गोदना, जिसे अंग्रेजी में टैटू के नाम से जाना जाता है, भारत की एक प्राचीन और पारंपरिक कला है। इसका इतिहास बहुत पुराना है और यह भारत की विविध सांस्कृतिक और धार्मिक धरोहर का अभिन्न हिस्सा रही है। गोदना कला को शारीरिक सजावट के रूप में नहीं, बल्कि आत्माभिव्यक्ति, सौंदर्य और सांस्कृतिक पहचान के रूप में देखा जाता है। भारत में इस कला के प्रमाण सिंधु घाटी सभ्यता में मिलते हैं, जहाँ खुदाई में मिले अवशेषों पर गोदना के निशान पाए गए हैं। ऐतिहासिक ग्रंथों और पुराणों में भी गोदना का उल्लेख मिलता है। विभिन्न जनजातीय समुदायों और ग्रामीण समाज में गोदना की परंपरा आज भी जीवित है और इसे विशेष अवसरों, धार्मिक त्योहारों और सामाजिक अनुष्ठानों के दौरान किया जाता है।³

भारत में मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड, बिहार और ओडिशा के जनजातीय समुदायों में गोदना की प्राचीन परंपराएँ प्रचलित हैं। गोदना कला विशेष रूप से महिलाओं में लोकप्रिय है। गोदना शैली में ज्यादातर हाथों, पैरों, और चेहरे पर जटिल और विस्तृत डिजाइन बनाए जाते हैं।

आज गोदना कला ने आधुनिक टैटू कला के रूप में भी पहचान बना ली है। आधुनिक टैटू कलाकार पारंपरिक गोदना शैलियों को नए और विचित्र डिजाइन में परिवर्तित कर रहे हैं। शहरी क्षेत्रों में युवा पीढ़ी में टैटू का प्रचलन बढ़ा है और इसे फैशन स्टेटमेंट के रूप में देखा जा रहा है। हालांकि, पारंपरिक गोदना कला आज भी ग्रामीण और जनज, तीर्थ समुदायों में अपने मूल रूप में प्रचलित है। सरकार और विभिन्न संगठनों द्वारा इन पारंपरिक कलाओं को प्रोत्साहित करने और संरक्षित रखने के प्रयास किए जा रहे हैं।^४



चित्र-3



चित्र-4

गोदना कला, पेपर पर, मोईनुद्दीन अहमद आर्ट गैलरी, ए.एम.यू.अलीगढ़।

मिथिला क्षेत्र में गोदना कला

मिथिला कला, जिसे मधुबनी कला के नाम से भी जाना जाता है, भारत के बिहार राज्य के मिथिला क्षेत्र की पारंपरिक चित्रकला है। ऐसा माना जाता है कि मिथिला कला की उत्पत्ति रामायण काल से हुई थी, जब भगवान राम और सीता का विवाह हुआ था। उस समय मिथिला के राजा जनक ने अपने महल की दीवारों को इन चित्रों से सजाया था। इस कला की उत्पत्ति और विकास स्थानीय महिलाओं द्वारा घर के आँगन और दीवारों पर चित्रकारी के रूप में हुआ। यह कला शैली मुख्यतः दो प्रकार की होती है- कवनी शैली और भरनी शैली। गोदना कला मधुबनी का ही एक रूप है, जिसे यहाँ की माँ, हलाओं ने अपने जीवन का हिस्सा बनाया और पीढ़ियों से संरक्षित और प्रचलित रखा है। मिथिला की गोदना कला इसी सांस्कृतिक विरासत का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। गोदना कला की उत्पत्ति और विकास की कहानी हमें इस क्षेत्र की सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक जड़ों तक ले जाती है।^५

मिथिला क्षेत्र की गोदना कला में प्रयुक्त होने वाले रूपांकन और प्रतीक भी अपने आप

में विशिष्ट होते थे। इनमें प्रमुखता से ज्यामितीय आकार, धार्मिक प्रतीक, देवी-देवताओं के चित्र, और प्राकृतिक तत्व शामिल होते थे। इन रूपांकनों का गहरा सांस्कृतिक और आध्यात्मिक अर्थ होता था। उदाहरण के लिए मछली, हाथी और कमल के फूल जैसे प्रतीक समृद्धि और सौभाग्य का प्रतीक माने जाते थे। गोदना बनाने वाले कारीगरों को समाज में सम्मानित स्थान प्राप्त था और वे विभिन्न अवसरों पर आमंत्रित किए जाते थे।^६

गोदना कला ने समय के साथ आधुनिक संदर्भों में अपने को अनुकूलित किया, विशेष रूप से २०वीं शताब्दी के मध्य से गोदना कला ने कैनवास और अन्य सतहों पर अपनी जगह बनाई है। इस परिवर्तन ने गोदना कला को न केवल संरक्षण दिया बल्कि इसे एक व्यापक दर्शक वर्ग तक पहुँचाया।^७



चित्र-७



चित्र-६

गोदना की प्रक्रिया

गोदना की प्रक्रिया सदियों पुरानी है और इसे पारंपरिक रूप से पीढ़ी दर पीढ़ी हस्त-तांत्रित किया गया है। गोदना की प्रक्रिया डिजाइन के चयन से शुरू होती है। हर डिजाइन का विशेष अर्थ और प्रतीकात्मक महत्व होता है। डिजाइन का चयन व्यक्ति की व्यक्तिगत पसंद, धार्मिक आस्था और सामाजिक स्थिति के आधार पर किया जाता है। गोदना करने से पहले त्वचा को अच्छी तरह से साफ किया जाता है और उसे संक्रमण से बचाने के लिए विभिन्न प्रकार के प्राकृतिक तेलों का उपयोग किया जाता है। पारंपरिक गोदना की प्रक्रिया में बांस की सूइयों का प्रयोग होता है। सूइयों के माध्यम से त्वचा पर डिजाइन को उकेरा जाता है। इस प्रक्रिया के दौरान त्वचा के अंदर

प्राकृतिक रंगों को भरने के लिए प्राकृतिक तत्वों का उपयोग किया जाता है। ये रंग सामान्यतः पेड़-पौधों, फूलों और अन्य प्राकृतिक स्रोतों से प्राप्त किए जाते हैं। नीला, हरा और काला रंग प्रमुखता से प्रयोग होता है।

सामग्री

चारकोल और हर्बल पेस्ट: चारकोल को बारीक पीसकर और हर्बल पेस्ट को मिलाकर एक गाढ़ा रंग तैयार किया जाता था, जिसे टैटू बनाने के लिए उपयोग किया जाता था।

प्रकृति : विभिन्न पौधों से निकाले गए रंगों का भी प्रयोग होता था। जैसे- नील, हल्दी, और अन्य पौधों से प्राकृतिक रंग बनाए जाते थे, जो त्वचा पर लगाने के लिए सुरक्षित होते थे।

बांस और लकड़ी : काँटे या सूई को पकड़ने के लिए बांस या लकड़ी की छड़ी का उपयोग होता था। इससे गोदाई की प्रक्रिया में स्थिरता और नियंत्रण बनाए रखा जाता था।

शहद और तेल : त्वचा को नरम बनाने और संक्रमण से बचाने के लिए शहद और तेल का उपयोग होता था। यह सामग्री गोदाई के बाद त्वचा पर लगाई जाती थी।



चित्र-७



चित्र-८



चित्र-९

डिजाइन और रूपांकन

गोदना कला में ज्यामितीय आकार वृत्त, त्रिकोण, चौकोर एवं प्राकृतिक तत्वों फूल, पत्तियां, जानवर और पक्षी जैसे का प्रमुखता से उपयोग होता है। यह रूपांकन साधारण होते हुए भी अत्यंत सुंदर और आकर्षक होते हैं। ओम, स्वस्तिक, त्रिशूल और अन्य धार्मिक प्रतीकों का प्रयोग आस्था, सुरक्षा और धार्मिक विश्वासों को प्रकट करता है। कमल, गुलाब और अन्य फूलों के डिजाइन सौंदर्य, पवित्रता और आध्यात्मिकता के प्रतीक होते हैं। यह प्रतीक शुभ, सौभाग्य के रूप में और देवी-देवताओं के वाहन के रूप में भी गोदना कला में प्रस्तुत किये गये हैं ।

गोदना कला का वैश्विक मंच पर स्थान

गोदना कला को अंतर्राष्ट्रीय कला प्रदर्शनियों में प्रदर्शित किया जा रहा है। इससे इस कला को वैश्विक स्तर पर पहचान मिली है और इसे एक व्यापक दर्शक वर्ग तक पहुँचाने का अवसर मिला है। विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय कला संगठनों और संस्थानों जैसे- festivalsfromindia, International Indian Folk Art Gallery, nalinicreations के साथ सहयोग से गोदना कला को वैश्विक मंच पर प्रस्तुत करने के नए रास्ते खुले हैं। यह सहयोग इस कला के संरक्षण और संवर्धन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। गोदना पेंटिंग्स की अंतर्राष्ट्रीय कला बाजार में मांग ने स्थानीय कलाकारों को नए व्यावसायिक अवसर प्रदान किए हैं। इससे कलाकारों की आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है। ऑनलाइन कला गैलरी और प्लेटफार्म- ARTSofINDIA, exotic India, dastkarihaatsamiti के माध्यम से भी गोदना कला को वैश्विक दर्शकों तक पहुँचाने का प्रयास किया जा रहा है। ये प्लेटफार्म कलाकारों के लिए एक महत्वपूर्ण व्यवसायिक अवसर बन गए हैं। विभिन्न सरकारी और गैर-सरकारी संगठनों द्वारा गोदना कला के संरक्षण और संवर्धन के लिए कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। इन कार्यक्रमों में विभिन्न प्रशिक्षण, प्रदर्शनी और कार्यशालाएं शामिल हैं।



चित्र-१०



चित्र-११

मिथिला में गोदना कला का कैनवास पर रूपांतरण

गोदना कला का मिथिला क्षेत्र में कैनवास पर रूपांतरण न केवल इस पारंपरिक कला रूप के विकास का प्रतीक है, बल्कि यह सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण और संवर्धन का भी उदाहरण है। सन् १९७० के आसपास मिथिला कला कागज़ पर बनाना शुरू हो गया था। शहरीकरण और आधुनिकता के बढ़ते प्रभाव ने पारंपरिक जीवन शैली और सांस्कृतिक प्रथाओं को प्रभावित किया है। वर्तमान में गोदना कला को त्वचा के बजाय अन्य माध्यमों पर प्रदर्शित करना अधिक प्रचलन में है, जैसे - कैनवास, कपड़े, रेशम और कागज़। शिक्षा के प्रचार-प्रसार ने कला के प्रति जागरूकता और इसके संरक्षण

की आवश्यकता को बढ़ावा दिया है। १० शिक्षित युवा और कलाकार पारंपरिक कला को आधुनिक संदर्भों में अपना रहे हैं। कैनवास पर गोदना कला ने कलाकारों के लिए नए व्यावसायिक अवसर खोले हैं। कैनवास पेंटिंग की मांग ने कलाकारों को आर्थिक रूप से सशक्त किया है। कैनवास पर बनाई गई गोदना पेंटिंग्स को अंतर्राष्ट्रीय कला बाजार में भी पहचान मिली है, जिससे कलाकारों को वैश्विक मंच पर प्रस्तुत होने का अवसर मिला है। समकालीन गोदना कलाकार पारंपरिक रूपांकनों के साथ नए विषयों और शैलियों को भी जोड़ रहे हैं। यह नवाचार परम्परा और आधुनिकता के बीच एक पुल का काम करता है। कैनवास के अलावा पेपर, वुड और अन्य सतहों पर भी गोदना कला को चित्रित किया जा रहा है, जिससे इसकी अभिव्यक्ति के नए रास्ते खुल रहे हैं। ११

समकालीन तकनीकी

आजकल कई कलाकार पारंपरिक काँटे और सूई के बजाय आधुनिक टैटू मशीन का उपयोग कर रहे हैं। यह उपकरण तेज़ और अधिक सटीक टैटू बनाने में सहायक है। प्राकृतिक रंगों के स्थान पर अब सिंथेटिक और हाइपोएलर्जिक रंगों का उपयोग किया जा रहा है। यह रंग त्वचा के लिए सुरक्षित और अधिक टिकाऊ होते हैं। १२

गोदना कला के रूपांकनों को कैनवास पर चित्रित करने के लिए एंक्रेलिक पेंट और ब्रश का उपयोग किया जाता है। यह प्रक्रिया पारंपरिक टैटू तकनीकों से भिन्न होते हुए भी उनकी सुंदरता और जटिलता को बनाए रखती है। इससे इस कला के अभिव्यक्ति के नए रास्ते खुल रहे हैं। १३



चित्र-१२



चित्र-१३

प्रमुख कलाकार और उनके योगदान

गोदना कला को स्थानीय स्तर पर बल्कि राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक सम्मानित कला के रूप में पहचान दिलाने में यहाँ की महिलाओं का बहुत बड़ा योगदान रहा है। मिथिला (बिहार) में सर्वप्रथम चानो देवी ने गोदना चित्रकला की शुरुआत की और कागज़ पर गोदना डिज़ाइन बनाने का काम शुरू किया तत्पश्चात् उनकी कला ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान प्राप्त की। उनके चित्र विभिन्न देशों के संग्रहालयों और गैलरियों में प्रदर्शित किए गए। उन्हें सन् १९८४-८५ में राज्य पुरस्कार और २००७ में राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया।^{१४}

दुलारी देवी ने गोदना कला को एक नई ऊंचाई तक पहुंचाया। उन्होंने पारंपरिक डिज़ाइन और प्रतीकों का उपयोग करके इसे मिथिला चित्रकला के साथ जोड़ा। उनके गोदना डिज़ाइन में विभिन्न धार्मिक, पौराणिक और सांस्कृतिक विषय शामिल हैं। उनके गोदना डिज़ाइन में अक्सर देवी-देवताओं, फूल-पत्तियों और विभिन्न ज्यामितीय आकृतियों का चित्रण होता है।

मंजू देवी पारंपरिक रूपांकनों को कैनवास पर अनुकूलित किया तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान भी दिया। सुरेखा मिश्रा समकालीन रूपांकनों और आधुनिक तकनीकों का उपयोग करते हुए पारंपरिक गोदना कला को नया रूप देने वाली कलाकार के रूप में जानी जाती है। इनके अलावा यमुना देवी, मंजू देवी, सुरेखा मिश्रा, गंगा देवी, जगदंबा देवी, सीता देवी, बौवा देवी, महासुंदरी देवी, कर्पूरी देवी, विमला दत्त और गोदावरी दत्त और शांति देवी आदि ने मिथिला तथा गोदना कला को जीवित रखने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।^{१५}

चुनौतियाँ तथा सलाह

आधुनिकता और पश्चिमी प्रभाव के कारण पारंपरिक गोदना कला का महत्व कम होता जा रहा है। युवा पीढ़ी में पारंपरिक डिज़ाइनों की ओर रुझान कम हो रहा है, जिससे इस कला की पुरानी शैलियाँ खोने का खतरा है। पारंपरिक गोदना कला को करने वाले कुशल कलाकारों की संख्या कम हो रही है। इस कला को सीखने और सिखाने की परंपरा कमजोर हो रही है, जिससे इसके अस्तित्व पर संकट आ रहा है। अंतरराष्ट्रीय और स्थानीय बाज़ारों में प्रतिस्पर्धा बढ़ने से गोदना कलाकारों को स्थिर आय प्राप्त करने में कठिनाई हो सकती है। शिक्षा और सरकारी पहलों के माध्यम से गोदना कला के संरक्षण और संवर्धन के प्रयास किए जा सकते हैं। कला विद्यालयों और संगठनों द्वारा कार्यशालाओं और प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन इस दिशा में सहायक हो सकता है। अंतरराष्ट्रीय कला प्रदर्शनियों और ऑनलाइन प्लेटफॉर्मों के माध्यम से गोदना कला को वैश्विक दर्शकों तक पहुँचाने के प्रयास किए जा सकते हैं। गोदना कला का कैनवास

पर रूपांतरण केवल एक सांस्कृतिक परिवर्तन नहीं है, बल्कि यह मिथिला की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर को जीवित रखने और उसे आधुनिक संदर्भों में प्रासंगिक बनाने का प्रयास भी है। इस अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष इस कला रूप के संरक्षण और संवर्धन के लिए आवश्यक कदम उठाने में मदद करेगा।

निष्कर्ष

गोदना कला का मिथिला क्षेत्र में कैनवास पर रूपांतरण एक उल्लेखनीय सांस्कृतिक और कलात्मक यात्रा है। इस शोध आलेख में गोदना कला के पारंपरिक रूप के ऐतिहासिक, सामाजिक और तकनीकी पहलुओं का गहन विश्लेषण किया गया है कि कैसे इसने समय के साथ अपने स्वरूप को बदलते हुए आधुनिक संदर्भों में प्रासंगिक बनाए रखा है।

गोदना कला की उत्पत्ति और इसके पारंपरिक रूप ने मिथिला की समृद्ध एवं सांस्कृतिक धरोहर की गहराई से अवगत कराया। धार्मिक, सामाजिक मान्यताओं के साथ सौंदर्य के प्रतीक भी थे। इस कला ने समाज में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका को भी उजागर किया। गोदना कला में प्रयुक्त पारंपरिक तकनीकों और सामग्री सदियों से स्थिर और प्रामाणिक रही हैं। हालांकि, समय के साथ आधुनिक तकनीकों और सामग्रियों के समावेश ने इस कला को नई दिशा दी है। आधुनिक टैटू मशीनों, एकेलिक पेंट और कैनवास जैसे उपकरणों का उपयोग करके गोदना कलाकारों ने इस कला को त्वचा से कैनवास पर रूपांतरित किया है। समकालीन गोदना कला ने पारंपरिक रूपांकनों के साथ नए विषयों और शैलियों को जोड़कर इस कला में नवाचार और विविधता लाई है। पारंपरिक गोदना डिजाइनों को कैनवास, पेपर और अन्य सतहों पर चित्रित करने के प्रयास ने इस कला को आधुनिक दर्शकों के बीच लोकप्रिय बना दिया है। इस परिवर्तन ने गोदना कला को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पहचान दिलाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। गोदना कला का कैनवास पर रूपांतरण न केवल इस कला के संरक्षण के लिए महत्वपूर्ण रहा है, बल्कि इसने स्थानीय कलाकारों के लिए नए व्यावसायिक अवसर भी खोले हैं।

गोदना पेंटिंग्स की बढ़ती मांग ने स्थानीय अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ किया है और कलाकारों की आर्थिक स्थिति में भी सुधार किया है। इसके साथ ही, इस कला के अंतर्राष्ट्रीय मंच पर प्रस्तुति ने मिथिला की सांस्कृतिक पहचान को वैश्विक स्तर पर उभारा है। गोदना कला के संरक्षण और संवर्धन के लिए कई चुनौतियाँ और अवसर हैं। पारंपरिक तकनीकों और मूल रूपांकनों का संरक्षण एक प्रमुख चुनौती है, जबकि शहरीकरण और आधुनिकता के प्रभाव ने इस कला में नए अवसर पैदा किए हैं। शैक्षिक और सरकारी पहल, कला विद्यालयों और ऑनलाइन प्लेटफॉर्मों के माध्यम से गोदना कला को संरक्षित रखने के प्रयास किए जा सकते हैं। गोदना कला का त्वचा से कैनवास पर

रूपांतरण न केवल इस कला के विकास का प्रतीक है, बल्कि यह मिथिला की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर को जीवित रखने का भी प्रयास है। परिवर्तन जीवन का नियम है और गोदना कला का यह परिवर्तन समझने में मदद करता है कि कैसे पारंपरिक कला रूप आधुनिक संदर्भों में प्रासंगिक हो सकते हैं। गोदना कला का यह रूपांतरण आने वाली पीढ़ियों के लिए भी प्रेरणा का स्रोत है।

संदर्भ

- १ राम दयाल राकेश, मिथिला लोक कला, नेपाल ललित कला अकादमी, २०१६, पृष्ठ २४.
- २ भारती दयाल, मधुबनी आर्ट, नियोगी बुक्स, २०१६, पृष्ठ ४०-५३.
- ३ कृष्ण कुमार कश्यप, गोदना चित्रा शैली (भाग-१), कला संजीवनी, २०२१.
- ४ कृष्ण कुमार कश्यप और शशिबाला, मिथिला लोक चित्रकला, नेशनल बुक ट्रस्ट, २०१९.
- ५ इफतेखार आलम अंसारी, मिथिला लोक कला के उद्भव और परिवर्तन का प्रभाव, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, २०२०, पृष्ठ ३७-४९.
- ६ कल्याण कुमार चक्रवर्ती, गोदना पेंटिंग्स (पोर्टफोलियो), ललित कला अकादमी, २०१४.
- ७ राम दयाल राकेश, मिथिला के लोक उत्सव, पुस्तक फेथ इंडिया, १९९८.
- ८ इफतेखार आलम अंसारी, मिथिला लोक कला के उद्भव और परिवर्तन का प्रभाव, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, २०२०, पृष्ठ ९६-९८.
- ९ राम दयाल राकेश, मिथिला लोक कला, नेपाल ललित कला अकादमी, २०१६, पृष्ठ ५३.
- १० मिनी पी.वी., गोदना पेंटिंग्स, ललित कला अकादमी, २०१४.
- ११ रिकू कुमारी, गोदना: मधुबनी की दलित दुसाध महिलाओं का प्रतिरोध कला रूप, बहनबाँवस, २०२३.
- १२ इफतेखार आलम अंसारी, मिथिला लोक कला के उद्भव और परिवर्तन का प्रभाव, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, २०२०, पृष्ठ ७५-८५.
- १३ रिकू कुमारी, गोदना: मधुबनी की दलित दुसाध महिलाओं का प्रतिरोध कला रूप, बहनबाँवस, २०२३.
- १४ इफतेखार आलम अंसारी, मिथिला लोक कला के उद्भव और परिवर्तन का प्रभाव, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, २०२०, पृष्ठ १३७-३९.
- १५ वही पृष्ठ १५३-६३.